शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पालि काव्य-साहित्य में अनागतवंस : एक काव्यगत समीक्षा

डॉ..ज्ञानादित्य शाक्य
सहायक प्रोफेसर
स्कूल आफ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईजेशन
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर-201312, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोध संक्षेप

सम्बोधि-प्राप्ति के बाद पैंतालीस वर्षों तक शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा भाषित एवं अनुमोदित वचनों का संग्रह ही कालान्तर में तिपिटक कहलाया, जो पालि भाषा में संग्रहीत है। पालि तिपिटक-साहित्य के अन्तर्गत खुद्दकपाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु , पेतवत्थु , थेरगाथा, थेरीगाथा, अपदान एवं चरियापिटक आदि पालि ग्रन्थों में काव्यात्मकता की भरपूर झलक देखी जा सकती है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने अपने प्रथम वचन के द्वारा ही बुद्धशासन (पालि-साहित्य) में काव्य की स्थापना कर दी थी, जिसे पालि तिपिटक-साहित्य में उदान के रूप में जाना जाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के श्रीमुख से प्रसवित प्रथम-उदान से ही 'काव्य' का आविर्भाव माना जा सकता है। बुद्धवचन में काव्यात्मकता विद्यमान है जिसकी परिणति कालान्तर में पालि काव्य-साहित्य के रूप में हुयी। इसी पालि-काव्य-साहित्य में से आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ एक विशिष्ट कृति है। इसकी रचना आठवीं शताब्दी एवं दसवीं शताब्दी के मध्य में की गयी है। ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु को एक सौ ब्यालीस काव्यमयी गाथापदों के माध्यम से बहुत ही सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को प्रकाशित किया गया है। ग्रन्थ की भाषा-शैली में अलंकारिकता, रसात्मकता तथा गेयात्मकता विद्यमान है, जो ग्रन्थ की विषयवस्तु के अनुकूल प्रतीत होती है। यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह न केवल धार्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है, अपितु ऐतिहासिक, साहित्यिक, दार्शनिक, भौगोलिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी अति महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध, पालि तिपिटक-साहित्य, उदान, बुद्धवचन, महापरिनिर्वाण, अनागतवंस, अनागतवंस-अट्ठकथा, आचार्य भदन्त कस्सप थेर, मोहविच्छेदनी, विमतिच्छेदनी, बुद्धवंस, गन्धवंस, महाबोधिवंस, मैत्री-भावना, शान्त-रस, वीर-रस, वीभत्स-रस, अनुप्रास-अलंकार, छेकानुप्रास-अलंकार, पुनरुक्तिप्रकाश-अलंकार, उपमा-अलंकार, धम्मसेनापति सारिपुत्त, चार आर्यसत्य, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, दान, अनित्यता, शील एवं अप्रमाद।

प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि पालि काव्य-साहित्य की रचना का मूल आधार पालि तिपिटक साहित्य ही रहा है। पालि काव्य-साहित्य की वण्र्य-सामग्री बुद्धवचन है। बुद्धवचन की विषयवस्तु के रूप में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ पालि काव्य-साहित्य ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र को भी काव्यात्मक शैली के माध्यम से बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया है - जो पालि काव्य-साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है। पालि तिपिटक-साहित्य में सम्बोधि-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण तक

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के काल में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित व अनुमोदित वाणी को ही मूल रूप से प्रकाशित किया गया है। प्रारम्भिक पालि काव्य-साहित्य में उनके बाल्यकाल की चर्चा बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिक पालि काव्य-साहित्य में उनके बाल्यकाल से लेकर महापरिनिर्वाण काल तक की अवधि की घटनाओं तथा उनके द्वारा उपदेशित धर्म को बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। आधुनिक पालि काव्य-साहित्य ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से विश्व साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। आधुनिक पालि काव्य-साहित्य ने धर्म-दर्शन के साथ-साथ विश्व की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक वातावरण को भी प्रकाशित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसीलिए आधुनिक पालि काव्य-साहित्य न केवल मानव जाति, अपितु प्राणिमात्र के लिए एक प्रेरणा-स्रोत है। इसी आधुनिक पालि काव्य-साहित्य की एक महत्वपूर्ण शृंखला में अनागतवंस**1** नामक ग्रन्थ का भी नाम अग्रणी है। अनागतवंस2 नामक एक लघु एक परिष्कृत एवं प्रौढ़ पालि काव्य-ग्रन्थ है। अनागतवंस3 एक सौ ब्यालीस पालि गाथाओं से परिपूर्ण एक शतक-काव्य है।

अनागतवंस शब्द एक मौलिक शब्द नहीं है, अपितु यह दो शब्दों अनागत एवं वंस से मिलाकर बना है। अनागत शब्द की उत्पत्ति 'अन'4 एवं 'आगत'5 के सम्मिलन से हुई है। इस प्रकार से 'अनागत' शब्द की अर्थ 'जो अभी तक आया न हो' एवं 'जो अभी तक घटित न हुआ हो' निकलता है। 'अनागत' शब्द की उत्पत्ति 'न' एवं 'आगत' से हुई है यहाँ पर 'न' का अभिप्राय 'अन्' से लगाया गया है। अनागत शब्द का अभिप्राय भावी6, Future 7 (भविष्य) एवं Not come yet 8 (जो अभी तक न आया हो) होता है। वंस शब्द का अभिप्राय वंश9, वंश-परम्परा10, प्रवेणी11, परम्परा12 तथा इतिहास13 से है। यहाँ (ग्रन्थ में) पर अनागत शब्द का प्रयोग भविष्य में होने वाले मेत्तेय बुद्ध के सन्दर्भ में प्रयोग किया गया है। अनागतवंस एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें भविष्य में होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व के इतिहास को एक सौ ब्यालीस काव्यमयी गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है।

अनागतवंस नामक ग्रन्थ एक ऐसी कृति है, जिसमें रचनाकार ने स्वयं के सम्बन्ध में कोई भी सूचना नहीं दी है। अतः अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार के सम्बन्ध में प्रमाणित सूचना प्राप्त नहीं होती है, फिर भी अनागतवंस नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली के आधार पर तथा अन्य पालि स्रोतों को आधार मानकर कुछ प्रमाणिक जानकारी हासिल की जा सकती है। गन्धवंस नामक ग्रन्थ के वर्णनानुसार अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त कस्सप थेर14 हैं। अनागतवंस नामक ग्रन्थ पर आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने आत्म-प्रेरणा से अनागतवंस-अट्ठकथा नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसे प्रकाशित करते हुये गन्धवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार कहते हैं कि अनागतवंसस्स अट्ठकथा अत्तनो मतिया उपतिस्साचरियेन कता।15

हमें विदित है कि आचार्य भदन्त कस्सप थेर को एवं आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर के नाम से विभिन्न आचार्य बर्मा एवं श्रीलंका देशों में हुये हैं। अतः यह प्रमाणिक तौर पर नहीं कहा जा सकता है कि कौन से देश के कौन से आचार्य अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार हैं या

कौन से आचार्य अनागतवंस नामक ग्रन्थ के अट्ठकथाकार (रचनाकार) हैं?

आचार्य भदन्त कस्सप थेर अपने सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करते हुए कहते हैं कि नानाजनों के निवास से अतिरमणीय चोल देश के भार को वहन करने में कुल पर्वत के समान, कावेरी के पवित्र जल से हितयुक्त घरों वाले, राजाधिराज के उत्तम वंश से सुसन्तोषित, सम्पूर्ण उपभोग तथा परिभाग के धनों से, नाना रंगों से, भरी दुकानों से सुन्दर, नन्दन के स्वामी के समान ही चोराज का पुर है, वहाँ के श्रेष्ठ सुन्दर बौद्ध विहार में जो रहते हैं। विशालकृत शोभयमान, प्रांगणोंवाले इस नगर के 'नागावन' नामक विहार में वास करते हुये उन्होंने (आचार्य भदन्त कस्सप थेर) मोहविच्छेदनी नामक रत्नावली बनायी।16 आचार्य भदन्त कस्सप थेर को अनागतवंस नामक ग्रन्थ के साथ-साथ मोहविच्छेदनी, विमतिच्छेदनी एवं बुद्धवंस नामक ग्रन्थों के रचनाकार बतलाते हुए गन्धवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार कहते हैं कि कस्सपो नामाचारियो मोहविच्छेदनी, विमतिच्छेदनी बुद्धवंसो, अनागतवंसो ति चतुविब्बधं पकरणं अकासि।17 उपर्युक्त उद्धरण से यह प्रमाणित हो जाता है कि मोहविच्छेदनी, विमतिच्छेदनी, बुद्धवंस एवं अनागतवंस नामक चारों ग्रन्थों के एक ही व्यक्ति आचार्य भदन्त कस्सप थेर के द्वारा विरचित है।

हमें विदित है कि मोहविच्छेदनी और विमतिच्छेदनी - इन दोनों रचनाओं के लेखक दमिकरट्ठवासी कस्सप थेर या चोलिय कस्सप थेर ही थे।18 इस प्रकार से त्रिपिटकाचार्य डॉ.भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विरचित पालि साहित्य का इतिहास नामक ग्रन्थ में प्रदत्त उद्धरण से आचार्य भदन्त कस्सप थेर का चोल प्रदेश का वासी होना प्रमाणित होता है, जो स्वयं आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा भाषित है। इस प्रकार से अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त कस्सप थेर चोलदेशीय भारतीय विद्वान थे। इसीलिये इन्हें चोलीय काश्यप19 भी कहा जाता है। इसी प्रकार से सासनवंसदीप नामक ग्रन्थ में भी विनयपिटक की अट्ठकथा की टीका विमतिविनोदनी नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त कस्सप थेर को चोलदेश का निवासी बतलाया गया है, जो अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार भी हैं। इस प्रकार से उपरोक्त विश्लेषण एवं प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि अनागतवंस20 नामक ग्रन्थ भारतवर्ष के चोलदेश के महान विद्वान आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित एक महत्वपूर्ण चम्पूकाव्य है, जो पालि काव्य-साहित्य की एक अमूल्य काव्य-कृति है।

अनागतवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त कस्सप थेर ने ग्रन्थ में कहीं भी न तो अपना जीवनकाल बतलाया है और न ही ग्रन्थ का रचनाकाल बतलाया है। अतः अनागतवंस नामक ग्रन्थ की रचनाकाल निर्धारित करना भी एक बड़ी समस्या है। अनागतवंस नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली तथा अन्य पालि स्रोतों के आधार ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध में कुछ प्रमाणिक जानकारी हासिल की जा सकती है। यह ग्रन्थ आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित एक महत्वपूर्ण कृति है। कालान्तर में अनागतवंस नामक ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु को विस्तार से प्रकाशित रखने के हेतु एक अट्ठकथा लिखी गयी। श्रीलंका के महान आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने अनागतवंस नामक ग्रन्थ पर अनागतवंस-अट्ठकथा नामक ग्रन्थ की रचना की है जिसे प्रकाशित करते हुए गन्धवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहते हैं कि अनागतवंसस्स अट्ठकथा अत्तनो मतिया उपतिस्साचरियेन कता।21

अनागतवंस-अट्ठकथा नामक ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने महाबोधिवंस नामक ग्रन्थ की भी रचना की है। आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने महाबोधिवंस नामक ग्रन्थ की रचना दसवीं सदी तथा ग्यारहवीं सदी के मध्य में की है।22 इस प्रकार से यह स्वाभाविक सत्य है कि आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने अनागतवंस-अट्ठकथा नामक ग्रंथ की रचना भी दसवीं सदी तथा ग्यारहवीं सदी के मध्य में की हों। इस प्रकार से अनागतवंस नामक ग्रन्थ का रचनाकाल आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर द्वारा रचित अनागतवंस-अट्ठकथा से एक या दो शताब्दी पूर्व माना जा सकता है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर अनागतवंस नामक ग्रन्थ का रचनाकाल के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि अनागतवंस नामक ग्रन्थ आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित एक महत्त्वपूर्ण चम्पूकाव्य है जिसकी रचना आठवीं सदी से दसवीं सदी के मध्य में की गयी है।

आचार्य भदन्त चोलीय कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ के नामकरण से ही ग्रन्थ की विषयवस्तु पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जाती है। भविष्य में उत्पन्न होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र को प्रकाशित करना ही इस ग्रन्थ की मूल विषयवस्तु है। बौद्ध परम्परा में ऐसी मान्यता है कि जब यह लोक अज्ञानरूपी अन्धकार से आवृत्त हो जायेगा, तब उस अज्ञानान्धकार को दूर कर प्रज्ञा रूपी प्रकाश के प्रसार हेतु सर्वज्ञता से परिपूर्ण बुद्ध का आविर्भाव होगा, जो इस लोक में मेत्तेय बुद्ध के नाम से जाने जायेंगे। बौद्ध परम्परा ने इसी मान्यता को स्वीकार करते हुए आचार्य भदन्त चोलीय कस्सप थेर ने मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र को काव्यात्मक शैली में एक सौ बयालीस गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया है, जिसकी सम्पूर्ण विषयवस्तु का मूल आधार खुद्दकनिकाय के बुद्धवंस नामक ग्रन्थ एवं दीघनिकाय नामक ग्रन्थ के चक्कवत्तिसीहनादसुत्त23 को बताया गया है। कवि ने अनागतवंस नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु को शाक्यमुनि गौतम बुद्ध एवं उनके धम्मसेनापति अग्रश्रावक आयुष्मान् सारिपुत्त के मध्य संवाद के रूप में प्रकाशित किया है। कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के सम्यक् अनुशीलन के द्वारा ही दुःखों का अन्त करके जन्ममरण परम्परा को पूर्णतया नष्ट किया जा सकता है। दुःख समुदय के निरोध हेतु ब्रह्मचर्य का पालन, दान देना, मैत्री भावना24 का अभ्यास करना आवश्यक एवं अनिवार्य बताया गया है।

आचार्य भदन्त चोलीय कस्सप थेर ने अनागतवंस नामक ग्रन्थ में वर्णित सामग्री के माध्यम से भविष्य में प्रादुर्भूत होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से एक सौ बयालीस पालि गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने के हेतु रसात्मक भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें शान्त-रस, वीर-रस एवं वीभत्स-रस आदि रसों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने हेतु अलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। कवि ने इसमें अनुप्रास, छेकानुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश एवं उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। अलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग के कारण ग्रन्थ की गाथाओं की रोचकता एवं आकर्षकता में वृद्धि हो गयी है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अतः भाषा-शैली की दृष्टि से अनागतवंस नामक ग्रन्थ को एक उत्कृष्ट काव्य-कृति कहा जा सकता है।

आचार्य भदन्त कस्सप थेर ने एक सौ बयालीस गाथाओं के माध्यम अनागतवंस नामक ग्रन्थ की सम्पूर्ण विषयवस्तु को प्रकाशित किया है। कवि ने अनागतवंस नामक ग्रन्थ में वर्णित सामग्री को शाक्यमुनि गौतम बुद्ध एवं उनके धम्मसेनापति सारिपुत्त के मध्य संवाद के रूप में प्रकाशित किया है। अनागतवंस नामक ग्रन्थ एक ऐसी रचना है, जिसमें गेयात्मकता से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने के हेतु गेयात्मकता से ओतप्रोत भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को बहुत ही आकर्षक, सार्थक, गुणयुक्त एवं दोषरहित शब्दों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है, जो गेयात्मकता से परिपूर्ण है। गेयात्मकता से परिपूर्ण होने के कारण अनागतवंस नामक ग्रन्थ में वर्णित सामग्री का अध्ययन करने से पाठक एवं श्रोताओं को रसपूर्ण आनन्द एवं प्रसन्नता की हर्षोल्लासपूर्ण स्थिति की प्राप्ति होती है।

आचार्य भदन्त कस्सप थेर ने अनागतवंस नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु को दीघनिकाय एवं बुद्धवंस जैसे पालि ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर प्रकाशित किया है। अतः अनागतवंस नामक ग्रन्थ की भाषा-शैली पर पालि-साहित्य के ग्रन्थों में प्रयुक्त भाषा-शैली का काफी प्रभाव परिलक्षित होता है। कवि ने ग्रन्थ की विषयवस्तु की रचना मुख्य रूप से बुद्धवंस नामक ग्रन्थ की भाषा-शैली के आधार पर की है। अतः अनागतवंस नामक ग्रन्थ एवं बुद्धवंस नामक ग्रन्थ की भाषा-शैली में काफी साम्यता है। जैसे - भगवान् विपस्सी बुद्ध के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्यों को बुद्धवंस नामक ग्रन्थ में प्रकाशित करते हुए कहा गया है कि -

नगरं बन्धुमती नाम, बन्धमो नाम खत्तियो।
मता बन्धुमती नाम, विपस्सिस्स महेसियो।।25

बुद्धवंस नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त वर्णन-शैली के अनुरूप ही गाथा को प्रकाशित करते हुए अनागतवंस नामक ग्रन्थ में कहा गया है कि -

संघो नाम उपासको, संघा नाम उपासिका।
पच्चुपेस्सन्ति सम्बुद्धं, चतुरासीतिसहस्सतो।।26

इस प्रकार से स्पष्ट को जाता है कि अनागतवंस नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली एवं पालि-साहित्य की भाषा-शैली में अत्यधिक साम्यता है। इसकी भाषा-शैली में सरलता एवं सरसता है। ग्रन्थ की भाषा-शैली काफी आकर्षक एवं प्रभावशाली है जो पाठक एवं श्रोता को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस प्रकार से आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ में प्रयुक्त भाषा-शैली ग्रन्थ की सामग्री के अनुकूल प्रतीत होती है।

आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक महत्वपूर्ण पालि काव्य-ग्रन्थ की विषयवस्तु अत्यधिक सरल, सुगम एवं सुबोध है, जिसे न केवल पालि-साहित्य के विद्वान, अपितु छात्र, पाठक, शोधार्थी, साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले एवं श्रद्धालुजन भी इसे पढ़कर या सुनकर समझ सकते हैं। इसमें वर्णित सामग्री बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं सुन्दर है जिसके कारण ग्रन्थ में अत्यधिक उत्सुकता का तत्व सन्निहित है। विषयवस्तु के रुचिपूर्ण होने के कारण पाठक या श्रोता को ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु को बार-बार पढ़ने या सुनने के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

अनागतवंस नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु अत्यधिक समृद्धिशाली है; क्योंकि आचार्य भदन्त

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कस्सप थेर ने इस ग्रन्थ में भविष्य में उत्पन्न होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री के अध्ययन के द्वारा पाठक या श्रोता को धार्मिक एवं दार्शनिक तथ्यों के साथ-साथ जम्बूद्वीप की भावी भौगोलिक एवं सामाजिक दशा का ज्ञान होता है। यह धार्मिक एवं दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। इस ग्रन्थ के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है -

आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। कवि ने ग्रन्थ में वर्णित सामग्री बहुत ही रोचक, आकर्षक, प्रभावशाली एवं सुन्दर बनाने के हेतु बौद्ध सिद्धान्तों को प्रकाशित किया है। कवि ने मुख्य रूप से चार आर्यसत्य, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, दान, अनित्यता, मैत्री, शील एवं अप्रमाद को अत्यधिक आकर्षक, सरल एवं सुबोध भाषा-शैली के माध्यम से पाठकों एवं श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। यह सर्वविदित सत्य है कि इस संसार के विश्व इतिहास में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध को एक महान ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व, उपदेश एवं संवादों को प्रकाशित करने वाली कृति का ऐतिहासिक होना भी एक स्वाभाविक सत्य है। इसमें वर्णित एक सौ बयालीस गाथाओं के माध्यम से कवि ने किसी न किसी रूप में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व, उपदेश एवं संवादों को ही प्रकाशित किया है, लेकिन कवि ने भविष्य में उत्पन्न होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को मूल रूप से प्रकाशित किया है। इसमें वर्णित सामग्री को शाक्यमुनि गौतम बुद्ध एवं उनके धम्मसेनापति सारिपुत्त के मध्य संवाद के रूप में प्रकाशित किया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व, उपदेश एवं संवादों को भारतीय इतिहास में प्रमाणिक स्थान प्राप्त है तथा वे एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने अपने ही जीवनकाल में भविष्य में उत्पन्न होने वाले मेत्तेÕय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण घोषणाएँ की थीं जो दीघनिकाय जैसे ऐतिहासिक पालि ग्रन्थ में संग्रहीत हैं। अतः आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ की विषयवस्तु ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ पालि काव्य-साहित्य की अत्यधिक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है जो साहित्यिक दृष्टि से एक अति महत्वपूर्ण काव्य-रचना है। कवि ने भविष्य में उत्पन्न होने वाले मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को एक सौ बयालीस गाथापदों के माध्यम से बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। कवि ने ग्रन्थ में ने मेत्तेय बुद्ध का न केवल गृहस्थ, अपितु प्रव्रजित जीवन को भी बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। यह सत्य है कि ग्रन्थ में वर्णित विषयवस्तु अति महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित है। इस ग्रन्थ में वर्णित सामग्री के स्पष्टीकरण हेतु कालान्तर में आचार्य

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भदन्त उपतिस्स थेर ने दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में अनागतवंस नामक ग्रन्थ पर एक अट्ठकथा ग्रन्थ की रचना की। अनागतवंस नामक ग्रन्थ पर आचार्य भदन्त उपतिस्स थेर ने आत्म-प्रेरणा से अनागतवंस-अट्ठकथा नामक ग्रन्थ की रचना की है जिसे प्रकाशित करते हुए गन्धवंस नामक ग्रन्थ के रचनाकार कहते हैं कि अनागतवंसस्स अट्ठकथा अत्तनो मतिया उपतिस्साचरियेन कता।27 इस प्रकार से विषयवस्तु की दृष्टि से आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित अनागतवंस नामक ग्रन्थ अति विशिष्ट काव्य-कृति है। अनागतवंस नामक ग्रन्थ में वर्णित सामग्री इतनी विस्तृत है कि इसकी व्याख्या के हेतु अट्ठकथा एवं टीका-ग्रन्थों के रूप में कई ग्रन्थों की रचना की जा सकती है।

अनागतवंस नामक काव्य-ग्रन्थ पालि-काव्य-साहित्य की एक अति विशिष्ट कृति है, जो आचार्य भदन्त कस्सप थेर द्वारा विरचित है। इसकी रचना आठवीं शताब्दी एवं दसवीं शताब्दी के मध्य में की गयी है। इसमें वर्णित विषयवस्तु को एक सौ बयालीस काव्यमयी गाथापदों के माध्यम से बहुत ही सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध शैली में प्रस्तुत किया गया है जिसमें मेत्तेय बुद्ध के जीवन-चरित्र एवं कृतित्व को प्रकाशित किया गया है। इसकी भाषा-शैली में अलंकारिकता, रसात्मकता तथा गेयात्मकता विद्यमान है, जो ग्रन्थ की विषयवस्तु के अनुकूल प्रतीत होती है। इस एक ऐसी रचना है, जो न केवल धार्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है, अपितु ऐतिहासिक, साहित्यिक, दार्शनिक, भौगोलिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी अति महत्वपूर्ण है। इसने न केवल पालि साहित्य के विकास में योगदान दिया, अपितु विश्व साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनागतवंस नामक काव्य-ग्रन्थ पालि काव्य-साहित्य की एक श्रेष्ठ एवं अमूल्य कृति है, जो काव्यात्मकता से परिपूर्ण है।

सन्दर्भ

1. प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम प्रो. जे. मिनयेफ द्वारा रोमन लिपि में अनागतवंस नामक ग्रन्थ का सम्पादन किया गया जो सन् 1886 में जर्नल आफ पालि टैक्स्ट सोसाइटी, लन्दन में प्रकाशित किया गया। वर्तमान काल में भारतवर्ष में इस ग्रन्थ का देवनागरी संस्करण प्राप्त होता है जो डॉ.रमेश प्रसाद द्वारा सम्पादित है। वर्तमान काल में यह ग्रन्थ वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से सन् 2005 में प्रकाशित किया गया।

2. अनागतवंसो (सम्पादक) रमेश प्रसाद, वाराणसीः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 2005, पृ.1

3. जिनालंकार (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2015, पृ.59

4 Pāli English Dictionary (Eds.) T.W. Rhys Davids & William Stede, Delhi: Motilal Banarasidass Publishers Private Limited, 1997, P.31

5. Ibid

6. पालि-हिन्दी कोश (सम्पादक) भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुरः सुगत प्रकाशन कम्पनी, 1997, पृ.18

7. Dr.Babasaheb Ambedkar Writings and Speech Vol. XVI (Ed.) Vasant Moon, Mumbai: The Education Department, Government of Maharashtra, 1998, P.29

8. Pāli English Dictionary, Ibid, P.31

9. भरत सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, प्रयागः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2000, पृ.664

10. पालि-हिन्दी कोश, वही, पृ.284

11. भिक्षु धर्मरक्षित, पालि-साहित्य का इतिहास, वाराणसीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1988, पृ.153

12. वही

13. दाठावंस (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2016, पृ.56

14. गन्धवंसो (सम्पादक) बिमलेन्द्र कुमार, दिल्लीः ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1992, पृ.8

15. वही, पृ.22

16. भिक्षु धर्मरक्षित, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, पृ.191

17. गन्धवंसो, वही, पृ.8

18. भरत सिंह उपाध्याय, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, पृ.728

19. भिक्षु धर्मरक्षित, पालि-साहित्य का इतिहास, वही, पृ.190

20. जिनालंकार, वही, पृ.59

21. गन्धवंसो, वही, पृ.22

22. दाठावंस, वही, पृ.66

23. दीघनिकाय (अनुवादक) भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, लखनऊः भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद्, बुद्ध विहार, 1979, पृ.233

24. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2013, पृ.56

25. बुद्धवंसपालि, इगतपुरीः विपश्यना विशोधन विन्यास, 1998, पृ.350

26. अनागतवंसो, वही, पृ.7

27. गन्धवंसो, वही, पृ.22